संख्याक्रम की दृष्टि से स्थानांग का स्थान

अरबिन्द कुमार सिंह
डॉ० नवल किशोर पाण्डेय

स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग इन दोनों आगमों में विषय को प्रधानता न देकर संख्या की प्रधानता दी गई है। संख्या के आधार पर विषय का संकलन–आकलन किया गया है। एक विषय को दूसरे विषय के साथ इस सम्बन्ध की अन्वेषणा नहीं की जा सकती। जीव, पुद्गल, इतिहास, गणित, भूगोल, खगोल, दर्शन, आचार, मनोविज्ञान आदि शताधिक विषय बिना किसी क्रम के इसमें संकलित किये गये हैं। प्रत्येक विषय पर विस्तार से चिन्तन न कर संख्या की दृष्टि से आकलन किया गया है। प्रस्तुत आगम में अनेक–ऐतिहासिक सत्य–कथ्य रहे हुए हैं। यह एक प्रकार से कोश की शैली में आगम है, जो स्मरण करने की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी है।

जैन आगम साहित्य में तीन प्रकार के स्थविर बताये हैं। उनमें श्रुतस्थविर के लिए 'ठाण–समवायधरे' यह विशेषण आया है। इस विशेषण से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत आगम का कितना अधिक महत्त्व रहा है।